डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID: principalcmtjcollege@gmail.com Web:www.cmjcollege.com Mob.No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्रों के लिए ऑनलाइन कोर्स मैटेरियल (दिनांक–18 अप्रैल, 2020)

कृष्ण भक्ति साहित्य में 'अष्टछाप' का महत्त्व निर्धारित कीजिए

हिन्दी के कृष्ण भक्ति साहित्य में 'अष्टछाप' का विषेष महत्त्व है। 'अष्टछाप' में हिन्दी के सर्वोत्कृष्ट कवि हैं। पुष्टिमार्ग एवं षुद्धाद्वैतवाद के प्रवर्तक वल्लभचार्य ने अपने चौरासी षिष्यों में से चार उत्कृष्ट कवियों– सूरदास, कुंभनदास, परमानंद दास और कृष्णदास को दीक्षित किया। उनकी मृत्यु के बाद उनके पुत्र आचार्य विट्ठलनाथ ने दो सौ बावन षिष्यों में से उच्चकोटि के चार कवियों– गोविन्द स्वामी, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास तथा नन्ददास को दीक्षित किया। विट्ठलनाथ ने उन आठ कवियों को मिलाकर 1565 ई0 में 'अष्टछाप' या 'अष्टसखा' की स्थापना की। गुसांई विट्ठलनाथ ने इन अष्ट सखाओं पर अपने आषीर्वाद की छाप लगायी थी, इसीलिए इस मंडली का नाम 'अष्टछाप' पड़ा। 'अष्टछाप' के कवियों में सूरदास सर्वप्रमुख हैं और उन्हें 'अष्टछाप का जहाज' कहा जाता है।

कृष्णभक्ति साहित्य का अधिकांष साहित्य आठ कवियों की मंडली या 'अष्टछाप' के कवियों की देन है। 'अष्टछाप' के आठों कवि कृष्ण के अनन्य भक्त, संगीतज्ञ और समकालीन थे। ये सभी पुष्टि संप्रदाय के श्रेष्ठ कलाकार, कीर्तनकार एवं सत्संग करने वाले संगीतज्ञ थे। इन कवियों को पूरे आठ प्रहर के समय को बांटकर एक–एक पहर के लिए प्रत्येक भक्त को श्रीनाथ जी के मंदिर में सेवा–उपासना की जिम्मेवारी दी गयी थी। वे अपने– अपने समय में श्रीनाथ जी के मंदिर में कीर्तन, सेवा एवं प्रभुलीला संबंधी पद रचना करते और उसे गाते थे।

अष्टछाप का हिन्दी साहित्य में महत्त्व :–

'अष्टछाप' के कवियों ने धर्म, संस्कृति, कला और साहित्य की रचना को व्यापक प्रोत्साहन देकर एक नये इतिहास की रचना की। अष्टछाप की स्थापना अकबर (1556–1605) के समय में हुई थी और ये सारे कवि समकालीन थे। अकबर और उनके उत्तराधिकारी स्वयं बड़े कला और साहित्य के प्रेमी थे और इनके समय में कला का संरक्षण और उत्कृष्ट कला का निर्माण हुआ था। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि अष्टछाप के कवियों के समक्ष किसी तरह का कोई अवरोध नहीं था। अकबर के इस काल में हिन्दुओं के साथ पारिवारिक संबंध स्थापित होने तथा उसकी उदार नीति को लेकर धार्मिक स्थिति में भी पारस्परिक संबंधों के बीच उदारता दिखलायी पड़ती है।

संत साहित्य की मूल प्रेरणा का आधार जहां षंकरचार्य का अद्वैत मत था, जिसमें संसार को माया समझकर उसे त्याग देने और ब्रह्म को सत्य समझकर उसकी उपासना करने का उपदेष था। अष्टछाप के भक्त कवियों ने षंकर के अद्वैत का विरोध कर निम्बार्क द्वारा प्रवर्तित ''द्वैताद्वैत'', विष्णु स्वामी द्वारा प्रवर्तित ''षुद्धाद्वैत'' को कृष्ण भक्ति का आधार बनाया। इन लोगों ने मध्वाचार्य के द्वैतवाद के आश्रय से विकसित गौड़ीय संप्रदाय में चल रही 'राधा की उपासना' के माधुर्य भाव को भी अंगीकार किया। इस प्रकार अष्टछाप के कवियों ने कृष्ण के जिस सगुण स्वरूप की उपासना और भक्ति का मार्ग प्रषस्त किया वह सीधे–सीधे निर्गुण ब्रह्म की प्रतिक्रिया स्वरूप था, जिसका आधार 'ब्रह्मसूत्र गीता' और 'श्रीमद्भागवत'

था। वल्लभाचार्य और उनके पुत्र विट्ठलनाथ ने अपने भक्तिमार्ग के प्रचार हेतु आठ विषिष्ट भक्तों को चुना। वल्लभाचार्य ने जहां भगवान कृष्ण के बाल–रूप की उपासना पर बल दिया वहीं उनके उत्तराधिकारी पुत्र ने बालभाव के साथ–साथ कांता भाव का भी समावेष किया। इस तरह हिन्दी साहित्य में भारतीय धर्म के एक नये स्वरूप का विकास हुआ, जिसमें लौकिकता के आभास के साथ समग्रता में अलौकिक संदर्भों का विकास हुआ। इनलोगों ने मूर्ति को भी अवतार का एक रूप माना और भगवान के मूर्ति–विग्रह की सेवा संपूर्ण सुख सुविधा के साथ ठाट–बाट से करना आरंभ किया। सुन्दर वस्त्राभूषणों, सोने के मुकुट और श्रृंगारों से भगवान को सुसज्जित कर उन्हें सुस्वादु पदार्थों एवं व्यंजनों का भोग लगाने और प्रसाद वितरण के प्रावधानों का विधान हुआ। इन तथ्यों से स्पष्ट होता है कि सगुण उपासना कबीर की निवृति या जीवन के पलायन की भावना के विरुद्ध जीवन के समस्त सुखभोगों के साथ भगवान को समर्पित जीवन व्यतीत करने की प्रवृत्ति के साथ उपस्थित हुआ। इसी पृष्ठभूमि में अष्टछाप के कवियों ने श्रीनाथ जी के मंदिर में प्रतिदिन भगवान का कीर्तन–भजन और सेवा करते थे। एक पहर भगवान की सेवा के बाद वे सगुण साकार ब्रह्म की उपासना का सत्संग के माध्यम से प्रचार प्रसार भी करते थे।

अष्टछाप के कवियों के सत्संग का व्यापक प्रभाव इर्द–गिर्द के सामाजिकों और धार्मिक विचार के लोगों पर पड़ने लगा। जगह–जगह सत्संग का आयोजन होने से अष्टछाप के कवियों का महत्त्व बढ़ा। इन कवियों ने बड़े पैमाने पर सगुण साहित्य की रचना की और भारतीय धर्म और संस्कृति के विकास में महान योगदान दिया। इनके साहित्य में निहित दर्षन ने पूरे समाज में हलचल पैदा किया और 'निवृत्ति मार्ग' या जीवन से पलायन की भावना तथा निर्गुण के षुष्क तत्त्ववाद और रहस्यवाद की जगह सरस भक्ति, सरस प्रेम और श्रृंगार के आकर्षण से सौंदर्य के महत्त्व को प्रतिपादित किया। इनलोगों ने भगवान के माधुर्यमय रूप के वर्णन की प्रवृत्ति विकसित की। संपूर्ण प्रकृति के बीच प्रेम के संदर्भों को उद्दीप्त करने का प्रयास किया। प्रेमलोक की विविध भाव–दषाओं का मनोवैज्ञानिक वर्णन विष्व साहित्य के लिए मिषाल है। श्रीनाथ मंदिर के आठ द्वार हैं। ऐसा माना जाता है कि आठों कवि इन द्वारों के अधिकारी हैं। लौकिक लीला में वे भौतिक षरीरों से इन द्वारों पर स्थित रहते हैं और लीला की समाप्ति पर भौतिक षरीर को त्याग कर अलौकिक रूप में नित्य–लीला में लीन हो जाते हैं। इन गायकों ने विभिन्न राग–रागनियों में अपने पदों की रचना की है, जो आज भी संगीतज्ञों के गले का हार है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हिन्दी साहित्य में अष्टछाप के कवियों ने अपने महत्त्वपूर्ण योगद से निर्गुण के विरुद्ध सगुण की, लौकिक के विरुद्ध अलौकिक की, षुष्क तत्ववाद या मायावाद व रहस्यवाद के विरुद्ध सरस भक्ति–प्रेम–सौंदर्य की अजस्त्र धारा प्रवाहित कर हिन्दी साहित्य, धर्म, संस्कृति और लोकजीवन को सजीव बनाकर एक नयी दुनिया बसायी जहां भक्त और भगवान के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं है। उनके द्वारा 'ब्रजभाषा' साहित्य रचना की भाषा बनी और श्रीकृष्ण की लीला का आधार। एकांत भाव से लोक–परलोक, समाज और संस्कृति को बांधने और एक नया इतिहास रचने का श्रेय अष्टछाप के कवियों को प्राप्त है।

दिनांक : 18/04/2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**